REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2021

नासिरा शर्मा की कहानियों का अनुशीलन

सरिता
शोध छात्रा, पीएच.डी. (हिन्दी), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर (रोहतक).

प्रस्तावनाः–

नासिरा शर्मा का साहित्य जगत् में प्रवेश ही मूलतः कहानी के माध्यम से हुआ है। इन्होंने अपनी कहानियों में विभिन्न विषयों को उजागर किया है। इनके अब तक नौ कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए हैं जो इस प्रकार हैं– पत्थर गली, संगसार, इब्ने मरियम, शामी कागज, सबीना के चालीस चोर, खुदा की वापसी, इन्सानी नस्ल, शीर्ष कहानियाँ और दूसरा ताजमहल। इन सभी कहानी–संग्रहों की कहानियाँ अपनी विशेषता लेकर प्रकट होती हैं। इन कहानी–संग्रहों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

1. पत्थर गली

'पत्थर गली' कहानी संग्रह का प्रकाशन सन् 1986 में हुआ है। इस कहानी संग्रह में लेखिका ने मुस्लिम समाज की रूढ़िग्रस्त परंपराओं का चित्र प्रस्तुत किया है। साथ ही नारी की व्यथा और पीड़ा को भी चित्रित किया है। इस संग्रह में कुल आठ कहानियाँ संग्रहित हैं जो इस प्रकार हैं– 'बावली', 'सरहद के उस पार', 'बंद दरवाजा', 'कातिब', 'ताबूत', 'कच्ची दीवारे', 'पत्थर गली' और 'सिक्का'। 'बावली' कहानी में सलमा की मनोव्यथा का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। 'सरहद के उस पार' कहानी मनुष्य में भेद पैदा करने वाली विभिन्न स्थितियों में पैदा हुए मानव की कहानी है। यह कहानी भावनात्मक एकता की गहरी संवेदना से युक्त है। इस कहानी का नायक रेहान कहता है– "अंग्रेजों ने हमें फसाद की शक्ल में पाकिस्तान तोहफे में दिया है और हम इस जख्म को जब तक जिएंगे, पालते रहेंगे–करें भी क्या? कर ही कुछ नहीं सकते हैं। अपाहिज जो ठहरें.....।"[1] 'बंद दरवाजा' में पति–पत्नी काजिम तथा शबाना की करुण–कथा है। इसमें सामंती खानदानी इज्जत और झूठी शान के नाम पर एक खुशहाल जिंदगी बर्बाद होने का चित्रण है। 'कातिब कहानी' में उर्दू कातिब करने वाले कातिबों की अर्थाभावग्रस्त जिंदगी, साहित्यकारों द्वारा उनके शोषण और इस पेशे की बेचारगी का चित्रण है। 'ताबूत' कहानी निम्नवर्गीय मुस्लिम परिवार की अभावपूर्ण जिन्दगी और अविवाहित लड़कियों के पारिवारिक शोषण को रेखांकित करती है। 'कच्ची दीवारें' कहानी भी मुस्लिम पारिवारिक जीवन के यथार्थ और मानवीय संवेदना के चित्रण के साथ–साथ बुढ़ापे की समस्याओं का भी अंकन करती है। 'पत्थर गली' इस संग्रह की शीर्ष कहानी है। सामंती परिवेश में नारी की कुर्बानी को इस संग्रह की अंतिम कहानी 'सिक्का' में बताया गया है। इस कहानी में प्रेमानुभूति का काव्यात्मक इज़हार है।

'पत्थर गली' की कहानियों में लेखिका ने अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो आम बोलचाल के शब्द नहीं हैं। उदाहरणस्वरूप – महाजरत, मलगिजी, मुगन्नी, हर्राफा आदि। इसके साथ–साथ संस्कृत और उर्दू

[1] नासिरा शर्मा, पत्थर गली, (दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1986), पृ॰ 38.

के शब्दों का भी प्रयोग किया है। इसमें भावपूर्ण भाषा का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उर्दू शब्दों की अधिकता इसमें कहीं भी बाधक नहीं लगती है।

2. संगसार

'संगसार' कहानी–संग्रह का प्रकाशन सन् 1993 में हुआ। यह कहानी–संग्रह ईरान की क्रांतिकाल की मानवीय पीड़ा पर आधारित है। इस संग्रह में 'तारीख सनद', 'पहली रात', 'दरवाज–ए–कजाबिन', 'दीवार–ए–दीवार', 'गुंचा दहन', 'दिल की किताब', 'यहूदी सरगर्दान', 'जरा सी बात', 'उड़ान की शर्त', 'खलिश', 'झूठा पर्वत', 'संगसार', 'नमक का घर', 'अजनबी शहर', 'गूंगा आसमान', 'लबादा', 'आखिरी प्रहर' और 'तुम्हारे बिना' ये कहानियाँ संकलित हैं। 'तारीख सनद' इस संग्रह की प्रथम कहानी है यह ईरान की क्रांति से लोगों को जो यातनाएँ झेलनी पड़ी है उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती है। 'पहली रात' कहानी नारी पर होने वाले अत्याचारों पर केंद्रित है। सईद जब अहमद को जगाना चाहता है लेकिन मोहम्मद आगा ने उन्हें यह कहते हुए मना किया कि "सोने दे, महीनों बाद यह पहली रात थी जो सोया है, अभी इसको सोने दो।"[2] 'दरवाज–ए–कजविन' कहानी नारी शोषण पर लिखी गई है। 'उड़ान की शर्त' कहानी उड़ान की शर्त नारी के धनलिप्सा पर आधारित है। इस कहानी का तालिब अपने से अलग होने वाली अपनी पत्नी "मैं तुम्हें आजाद करता हूँ ताकि तुम ऊँची उड़ान भर सको, दुनिया देख सको, मगर एक बात याद रखना अतीत के नाम पर वर्तमान को सियाह करना उड़ान की शर्त नहीं है।"[3] कहकर अतीत का संदर्भ देते हुए आज़ाद करता है। 'संगसार' इस संग्रह की शीर्ष कहानी है। इस कहानी में धर्म और कानून नई समस्याओं के समाधान में कितने अर्थहीन हो चुके हैं– यह दिखाने का प्रयास किया है। 'गूंगा आसमान' एक संग्रह की एक अनूठी कहानी है। इसमें फरशीद जो पुलिस अफसर है वह औरतों पर अत्याचार करता है। इस कहानी–संग्रह में स्थित कहानियों का कैनवास बहुत व्यापक है। पाठक जितना संवेदनशील और जागरुक होगा ये कहानियाँ उतना ही अनेक कोनों, अर्थों और सरोकार के संग अपनी गहराई की पहचान कराती हैं।

3. इब्ने मरियम

इस कहानी–संग्रह का प्रकाशन 1994 में हुआ। इस संग्रह की कहानियाँ द्वितीय महायुद्ध के बाद आतंकवाद से पीड़ित राष्ट्रों की त्रासदी से साक्षात्कार कराती हैं। इस संग्रह में 'अमोख्ता', 'जड़े', 'जैतून के साये', 'काला सूरज', 'कागजी बादाम', 'तीसरा मोर्चा', 'मोमजामा', 'मिस्टर ब्राउनी', 'काशीदाकारी', 'जुलजुला', 'पुल–ए–सरात', 'जहाँनुमा और इब्ने मरियम' ये तेरह कहानियाँ संग्रहित है जिनमें पीड़ा, दुख, समस्याएँ और भावनाओं को समझने का प्रयास किया है। इस संग्रह की 'आमोख्ता' कहानी पंजाब में बँटवारे के समय लोगों पर हुए अत्याचारों का दर्दनाक चित्र उभारती है। 'जड़े' कहानी युगांडा में बसे भारतीय लोगों की त्रासदी का दर्शन कराती है। फिलिस्तान के मुक्ति संग्राम के समय लोगों पर किए अत्याचार का दर्दनाक प्रस्तुतीकरण है 'जैतून के साये'।

'कागजी आदाम' कहानी अफगानिस्तान के लोगों की समस्याओं को चित्रित करती है तो 'तीसरा मोर्चा' कहानी में कश्मीर में हुए हिंदू–मुस्लिम दंगों का दर्दनाक चित्रण मिलता है। इस कहानी में फसाद से पीड़ित स्त्री कहती है– "हिंदू और मुसलमान तो सिर्फ वह मर्द होते हैं जो अपने मजहब के उन्माद में औरत की आबरु लूटकर अपना धर्म निभाते हैं..... मैं कौन हूँ..... मेरा नाम, मेरा मजहब क्या है? मेरा मोहल्ला, मेरा पता क्या है? बताऊँ आपको कि मैं दो बच्चों की माँ हूँ और बच्चों का बाप साल–भर से लापता है?"[4] 'मोमजामा' कहानी सिरिया में गृहयुद्ध के कारण विस्थापित हुए बंदी और जबीबा पति–पत्नी कहानी है। स्कॉटलैंड में बसे भारतीय युवक भूरेलाल की व्यथा का चित्रण है 'मिस्टर ब्राऊनी'। भारत विभाजन के वक्त अलग हुए बंगलादेश और भारत के संबंधों का यथार्थ रूप 'काशीदाकारी' कहानी है, भोपाल में गैस दुर्घटनाग्रस्तों का आक्रांत है– इब्ने मरियम। इन कहानियों में नासिरा शर्मा ने इन्सानों की सामूहिक पीड़ा कितनी गहरी, सखी और तल्ख है– इसका मार्मिक चित्रण किया है।

---

[2] नासिरा शर्मा, संगसार, (दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 1993), पृ॰ 20.

[3] वही, पृ॰ 93.

[4] नासिरा शर्मा, इब्ने मरियम, (नई दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 1997), पृ॰ 68.

4. शामी कागज

1997 में प्रकाशित 'शामी कागज' नासिरा शर्मा का तीसरा कहानी–संग्रह है। इसमें सोलह कहानियों को संकलित किया गया है जो इस प्रकार हैं– 'खुशबू का रंग', 'मिस्र की ममी', 'दादगाह', 'पतझड़ का फल', 'दीमक', 'परिंदे', 'आईना', 'शामी कागज', 'आशयाना', 'आबे–तौबा', 'सहरा नवरद', 'तलाश', 'उकाब', 'मिट्टी का सफर', 'मुट्ठी भर धूप' और 'बेगाना ताजिर' है। इन कहानियों में लेखिका ने उस युग की बात की है जब ईरान में क्रांति का युग था और लोग अपने अधिकार के प्रति लड़ रहे थे। खुशबू का रंग ईरान में चल रही तानाशाही के विरोध में लड़ रहे दो प्रेमियों की कहानी है। 'मिस्र की ममी' 'प्रेम की हार' और 'कामांध' नारी की पोल खोलने' वाली कहानी है। 'पतझड़ का फूल' कहानी में विधवा नारी की समस्या को उठाया गया है। 'परिंदे' कहानी में भारत से ईरान में जाने वाले लोगों की विवशता का चित्रण मिलता है। इस कहानी की नायिका पाशा है जो कि शादी के पूर्व सदा हँसी मजाक करती थी। लेकिन मोहसिन की मृत्यु के बाद "वह रोना तो भूली सो भूली, हँसना भी भूल गई। हँसने की तो उसे आदत थी"[5] 'आशयाना' कहानी एक समस्याप्रधान कहानी है। निम्नवर्ग अपनी आर्थिक समस्याओं में ही किस प्रकार उलझ जाता है, इसका यथार्थ चित्रण इस कहानी में प्रकट हुआ है। 'ओबे–तौबा' नारी की मानसिक पीड़ा की अभिव्यक्ति है। 'मिट्टी का सफर' आर्थिक समस्या से ग्रस्त मुश्दगुलाम की कहानी है, जो अपने बेटे के आगे पढ़ने की इच्छा रखता है। 'शामी कागज' की सभी कहानियों में देश, भाषा और रंग का अपना प्रतिबिंब दिखाई देता है। यह कहानी–संग्रह जनमानस की संवेदनाओं के प्रति सोचने को बाध्य करता है।

5. सबीना के चालीस चोर

इसका प्रकाशन सन् 1997 में हुआ। इस संग्रह में 'विरासत', 'चांद–तारों की शतरंज', 'इमाम साहब', 'ततइया', 'गूंगी गवाही', 'सातघरवा', 'उसका बेटा', 'तक्षशिला', 'चिमगादड़े', 'सबीना के चालीस चोर' और 'आया बसंत सखी' ये बारह कहानियाँ सम्मिलित है। ये कहानियाँ भारतीय समाज का दुखद हाल प्रस्तुत करती हैं। 'विरासत' कहानी में नगरोन्मुखता की व्यथा का चित्रण है। 'चाँद तारों की शतरंज' और 'इमाम साहब' में आर्थिक समस्या और इससे जूझते परिवार का चित्रण है। 'ततइया' में नारी शोषण एवं नारी जीवन की व्यथा का चित्रण किया है। 'गूंगी गवाही' कहानी में वर्तमान व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करते हुये समाज में फैली अराजकता का यथार्थ अंकन हुआ है। 'सातघरवा' कहानी में नकाबपोश सभ्यता, वर्ग भेद तथा आधुनिक और पुरानी पीढ़ी के संघर्षों को शब्दबद्ध करते हुए उच्चवर्गीय की मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है। 'उसका बेटा' कहानी में दो वर्गों के संघर्ष पर प्रकाश डाला है। समाज और पुरुष द्वारा पिसती जा रही नारी का चित्र 'तक्षशिला' कहानी में मिलता है। 'चमगादड़े' कहानी शिक्षा क्षेत्र में पनप रही भ्रष्टता की पोल खोलती है। 'सबीना के चालीस चोर' देश विभाजन पर आधारित बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है। सांप्रदायिकता में पिसते समाज का चित्रण 'बसंत राखी' में मिलता है। कुल मिलाकर "दर्द की बस्तियाँ' की ये कहानियाँ, जिस भारतीय आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं वही इस देश की बुनियाद हैं। दरअसल ये ही कहानियाँ हिन्दुस्तान की सच्ची तस्वीर हैं, जिनका अंतर्संगीत इनके कथानकों के तारों में छिपा है। जिन्हें जरा–सा छेड़ों तो मानवीय करूणा का अथाह सागर ठाठें मारने लगता है।"[6]

6. खुदा की वापसी

'खुदा की वापसी' का संकलन प्रकाशन सन् 1999 में हुआ। इस संग्रह में 'खुदा की वापसी', 'चार बहने शीशमहल की', 'दहलीज', 'दिलआरा', 'पुराना कानुन', 'दूसरा कबूतर', 'बचाव', 'मेरा घर कहाँ' और 'नई हुकूमत' ये नौ कहानियाँ सम्मिलित हैं। इन सभी कहानियों में लेखिका ने मुस्लिम महिलाओं से संबंधित सवालों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। 'खुदा की वापसी' इस संग्रह की शीर्ष कहानी है। इस कहानी में लेखिका ने फरजाना के साहसी रूप का चित्रण किया है। फरजाना अपने पति का विरोध करती हुई कहती है – "मैं तो अपने को सजा दे रही हूँ अपनी हियाकत की तो यह कोख हमेशा सूनी रखूँगी, उस मर्द का बच्चा हरगिज कोख में नहीं पलने दूँगी, जो मोहब्बत के नाम पर सत्ता का परचम लहराए, जो औरत के अधिकार को अपनी चालाकी से

[5] नासिरा शर्मा, शामी कागज, (दिल्ली : सरस्वती प्रेस, 1997), पृ॰ 88.

[6] नासिरा शर्मा, सबीना के चालीस चोर, (दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 1997) पृ॰ 7,8.

छीन ले और उसे निहत्था बनाकर अपनी जीती जमीन का ऐलान करे..... वह जमीन अंकुर नहीं फोड़ेगी, कभी नहीं।"[7] 'चार बहनें शीशमहल की' कहानी चार बहनों की कहानी है। इस कहानी में लेखिका ने चारों बहनों की जिद्, साहस और निर्भयता का चित्रण किया है। 'दिलआरा' कहानी में प्रेम में पनप रही स्वार्थांधता एवं कायरता का वर्णन मिलता है। 'दूसरा कबूतर' कहानी में बहुपत्नीत्व के विरोध में नारी चेतना के दर्शन होते हैं। लेखिका ने इस कहानी में भविष्य की संभावना की ओर संकेत दिया है। 'बचाव' में मुस्लिम समाज में बहुपत्नीत्व के कारण होने वाली समस्याओं का चित्रण मिलता है। 'मेरा घर कहाँ' और 'नई हुकूमत' कहानियों में भी मुस्लिम महिलाओं की त्रासदी दर्शायी गई है। कहानियों की भाषा विविधता से युक्त है, जिसमें उर्दू शब्दों की भरमार होते हुए भी पाठकों के लिये अवरोध उत्पन्न नहीं होता है। शैलियों में पत्र शैली और स्वप्न शैली का प्रयोग सुंदर बन पड़ा है।

7. इन्सानी नस्ल

'इन्सानी नस्ल' कहानी संगह सन् 2000 में प्रकाशन हुआ। प्यारे हिन्दुस्तान के नाम लिखे इस कहानी–संग्रह में 'असली बात', 'अपराधी', 'पाँचवां बेटा', 'बड़े परदे का खेल', 'कोड़ा', 'अग्निपरीक्षा', 'मरुस्थल', 'उजड़ा फकीर', 'दुनिया', 'वही पुराना झूठ', 'इन्सानी नस्ल', 'एक न समाप्त होने वाली प्रेमकथा' और 'कनीज का बच्चा' ये तेरह कहानियाँ संग्रहित हैं। हर एक कहानी में नए कथ्य को उठाकर लेखिका ने अपनी प्रतिभा से पाठकों को अभिभूत किया है। सांप्रदायिकता पर आधारित कहानी 'असली बात' है। इस कहानी में लेखिका सांप्रदायिकता के बारे में कहती है– "पता नहीं कौन है जो यह सब करता है गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है।"[8] 'पाँचवां बेटा' कहानी में लेखिका ने हिन्दू–मुस्लिम सौहार्दता को चित्रित किया है। 'बड़े परदे का खेल' कहानी आधुनिक युग में प्रेम के नाम पर घिनौने कृत्य करने वालों की पोल खोलती है। 'अपराधी' कहानी में लेखिका ने अनेक बुनियादी समस्याओं का यथार्थ की गहराई से अंकन किया है। विभिन्न संदर्भों को उन्होंने सहजता से उजागर किया है। अकेलेपन से पीड़ित ईमानदार पुलिस अफसर का अकेलेपन से होने वाली पीड़ा का चित्रण इस कहानी में मिलता है। गांव की बर्बरता से भरे रीति–रिवाज और उसके द्वारा गरीबों का शोषण 'अग्नि परीक्षा' कहानी में दिखाकर लेखिका ने गांव का यथार्थ चित्रण किया है। 'दुनिया' कहानी में बदलते आधुनिक पारिवारिक संदर्भ का दर्शन मिलता है। 'इन्सानी नस्ल' इस संग्रह की शीर्ष कहानी सांप्रदायिकता पर आधारित है। इस संग्रह में भाषा और शैली की दृष्टि से नयापन है। मुहावरे और कहावतों के प्रयोग ने भाषा को ऊँचा उठा दिया है, लेकिन अरबी–फारसी शब्दों की भरमार सामान्य पाठक को खटकती है। शैलियों में पूर्वदीप्ति शैली, प्रतीकात्मक शैली और व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग दिखाई देता है।

8. शीर्ष कहानियाँ

सन् 2001 में प्रकाशित शीर्ष कहानियाँ नासिरा शर्मा का आठवाँ कहानी–संग्रह है। इसमें कुल सात कहानियाँ संग्रहित हैं– 'शामी कागज', 'पत्थर गली', 'संगसार', 'इब्ने मरियम', 'सबीना के चालीस चोर', 'खुदा की वापसी और इन्सानी नस्ल', ये सभी कहानियाँ इसके पूर्व में प्रकाशित संग्रहों की शीर्ष कहानियाँ हैं। इसका विवेचन उन संग्रहों में किया जा चुका है।

(i) दूसरा ताजमहल

'दूसरा ताजमहल' कहानी–संग्रह का प्रकाशन सन् 2002 में हुआ। इस संग्रह में 'दूसरा ताजमहल', 'तुम डाल–डाल, हम पात–पात', 'गोमती देखती रही', 'प्रोफेशनल वाइफ', 'पंच नगीना वाले', 'गली घूम गई' और 'संदुकची' इन सात दीर्घ कहानियों को सम्मिलित किया है। यह कहानी–संग्रह नासिरा शर्मा की मौलिक अनुभूतियों से सम्बन्ध रखती हुए यथार्थ का चित्र प्रस्तुत करता है। नासिरा शर्मा का यह ऐसा कहानी संग्रह है "जिसकी सारी कहानियाँ अपने रंग की हैं। उनमें आपसी कोई अंतर्धारा नहीं बहती है। ये कहानियाँ इन्द्रधनुष के ऐसे सात रंग हैं जो साथ रहने पर भी अपना अलग अस्तित्व रखने में सफल होती हैं।"[9]

[7] नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी, (दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 1998), पृ॰ 30,31.

[8] नासिरा शर्मा, इन्सानी नस्ल, (नई दिल्ली : प्रतिभा प्रतिष्ठान, 2000), पृ॰ 17.

[9] नासिरा शर्मा, दूसरा ताजमहल, (दिल्ली : इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, 2002), पृ॰ 7.

'दूसरा ताजमहल' इन्सान के दिए हुए वचनों और इमाम पर प्रकाश डालने वाली कहानी है। 'तुम डाल–डाल हम पात–पात' कहानी में भ्रष्ट पुलिस और उसके द्वारा पिसता सामान्य आदमी और अपनी सत्ता का गलत इस्तेमाल कर भोले, सीधे, शरीफ आदमी का जीना हराम करने वाले खेल का यथार्थ चित्रण मिलता है। इन कहानियाँ में लेखिका ने आधुनिक परिवेश, बदलते संदर्भ, स्त्री–पुरुष, संबंधों के बदलते प्रतिमान, मूल्य विघटन, घुटन जैसे विभिन्न संदर्भों का उद्‌घाटन किया है। भाषा के रूप में भी यहाँ आकर लेखिका काफी मात्रा में अरबी–फारसी भाषा के शब्दों के परहेज करती नज़र आती है। कुल मिलाकर यह लेखिका की कथा–यात्रा का एक नया पड़ाव है।